भगवद् गीता का ज्ञान – (1)

" चार प्रकार के भक्त ईश्वर को भजते हैं "

- श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमद् भगवद् गीता) के सातवें अध्याय के 16वें व 17वें श्लोकों में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि भक्त चार प्रकार के होते हैं - आर्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु तथा ज्ञानी; और उनमें ज्ञानी-भक्त सर्वश्रेष्ठ है। भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं –

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन । आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥७:१६॥
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते । प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥७:१७॥

अर्थात - " हे अर्जुन! पवित्र कर्म करने वाले चार प्रकार के भक्त-जन मुझको (अर्थात ईश्वर को) भजते हैं - आर्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु तथा ज्ञानी। उनमें नित्य मुझ ईश्वर में एकीभाव से स्थित अनन्य प्रेम-भक्ति वाला ज्ञानी-भक्त सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि मुझ ईश्वर को तत्त्व से जानने वाले ज्ञानी को मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह मुझे प्रिय है। " **(गीता – 7:16, 7:17)**

- स्वामी श्रीरामसुख दास जी ने **"श्रीमद्भगवद्गीता - साधक संजीवनी (परिशिष्ट-सहित)"** में पृष्ठ संख्या 529-530 पर इन चार प्रकार के भक्तों की विस्तृत व्याख्या की है, जिसका सारांश नीचे प्रस्तुत है –

1. ***आर्त भक्त*** *- जो दुःख या संकट आने पर ईश्वर को पुकारते या भजते हैं।*
2. ***अर्थार्थी भक्त*** *- जो सुख-संपत्ति आदि की इच्छा से ईश्वर को भजते हैं।*
3. ***जिज्ञासु भक्त*** *- जो आत्म-स्वरुप और भगवत-तत्व को जानने की इच्छा से ईश्वर को भजते हैं।*
4. ***ज्ञानी भक्त*** *- जो बिना किसी इच्छा के केवल भगवत-प्रेम में मस्त रहते हुए ईश्वर की भक्ति करते हैं।*

- आर्त और अर्थार्थी भक्तों की तुलना में जिज्ञासु भक्त श्रेष्ठ है, क्योंकि आर्त भक्त केवल कष्ट आने पर ईश्वर को पुकारता है और अर्थार्थी भक्त अपनी किसी सांसारिक आवश्यकता या इच्छा की पूर्ति के लिए ईश्वर को भजता है, जबकि जिज्ञासु भक्त की इच्छा अति पवित्र और उत्कृष्ट है। ईश्वर को तत्त्व-रूप से जानने वाला ज्ञानी-भक्त सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि वह बिना किसी इच्छा के परन्तु ईश्वर से अनन्य प्रेम के कारण उनकी भक्ति में लगा रहता है।